



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्रतिष्ठापक से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

367]
No. 367]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 8, 1992/भाद्र 17, 1914
NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 8, 1992/BHADRA 17, 1914

इस भाग में निम्न एक संका की जाती है जिससे कि यह अलग संकलन में छपने
रचा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(प्रधान न्याय पीठ)

अधिमूचना

नई दिल्ली, 8 सितम्बर, 1992

सा.का.नि. 757 (अ).—केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण, प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 13) की धारा 17 के साथ पठित न्यायालय अधिमान अधिनियम, 1971 (1971 का 70) की धारा 23 द्वारा प्रदत्त शक्तियों और इस निमित्त उसे समर्थ बनाने वाली सभी अन्य शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इस विषय पर सभी नियमों को अधिकांश करते हुए, उक्त अधिनियम के अधीन कार्यवाहियों का विनियमन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात्—

1. सक्षिप्त नाम और प्रारम्भ —(1) इन नियमों का सक्षिप्त नाम न्यायालय अधिमान (के.प्र.अ.) नियम, 1992 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ:—इन नियमों में जब तक कि विषय या संदर्भ से कोई बात इसके विरुद्ध न हो—

(क) "अधिनियम" से न्यायालय अधिमान अधिनियम, 1971 (1971 का 70) अभिप्रेत है,

(ख) "संहिता" से दंड प्रक्रिया संहिता अभिप्रेत है;

(ग) "प्रत्येक" से इन नियमों के परिशिष्ट में उल्लिखित प्रकार अभिप्रेत है,

(घ) "सदस्य" से न्यायिक या प्रशासनिक सदस्य अभिप्रेत है जिसमें उपाध्यक्ष और अध्यक्ष भी सम्मिलित हैं।

(ङ) "रजिस्ट्रार" से केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण या उसकी उन न्यायपीठ का रजिस्ट्रार अभिप्रेत है जहाँ अधिमान कार्यवाहियों की जाती हैं और इसमें संयुक्त रजिस्ट्रार और उप रजिस्ट्रार तथा रजिस्ट्रार के क्लर्कों का नियुक्त करने के लिए प्राधिकृत अनुभाग अधिकारी भी सम्मिलित हैं,

(च) "धारा" से अधिनियम की कोई धारा अभिप्रेत है,

(छ) "अधिकरण" से प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, 1985 के अधीन गठित केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण या उसकी वह न्याय पीठ अभिप्रेत है, जहाँ कार्यवाहियों का सञ्चालन किया जाता है,

(ज) उन शब्दों और पदों के, जो इन नियमों में परिभाषित नहीं हैं, वही अर्थ होंगे जो उनके अधिनियम में हैं।

3. प्रस्ताव का प्रवेश—अधिकरण के अवमान के लिए कार्रवाई प्रारम्भ करने का प्रत्येक प्रस्ताव, सिविल अवमान की दशा में "अवमान याचिका (सिविल)" और आपराधिक अवमान की दशा में "अवमान याचिका (आपराधिक)" के रूप में वर्णित याचिका में होगा।

4. कार्यवाहियों के पक्षकार—याचिका प्रस्तुत करने वाले पक्षकार को "याची" के रूप में और अभिकथित अवमानकर्ता को "प्रत्यर्थी" के रूप में वर्णित किया जाएगा।

5. याचिका की विषयवस्तु—याचिका में निम्नलिखित विशिष्टियाँ होंगी—

(1) (क) निम्नलिखित के नाम (जिसमें, जहाँ तक सम्भव हो पिता/माता/पति का नाम और आय भी सम्मिलित किए जाएँगे) उपजीविका और पता

(i) याची; और

(ii) प्रत्यर्थी

यदि अभिकथित अवमानकर्ता कोई अधिकारी है तो उसका वर्णन नाम और पदाभिधान से किया जाएगा।

(ख) अभिनियम के अवलंबित उपबंध और अवमान की प्रकृति "सिविल" या "आपराधिक";

(ग) अभिकथित अवमान का गठन करने वाले आधार और तात्विक तथ्य जिसमें अभिकथित अवमान की तारीख भी सम्मिलित है, वेराओं में विभक्त, क्रमानुसार संख्यांकित करते हुए, समर्थक दस्तावेजों या उनके मूल की प्रमाणित/फोटोस्टेट (अनुप्रमाणित) प्रतियों के साथ;

(घ) अधिकरण से इस्तिराघावेज की प्रकृति;

(ङ) यदि उसके द्वारा समान तथ्यों पर कोई याचिका पढ़ने को गई है तो उसके बारे में, विशिष्टियाँ और परिणाम;

(च) याचिका ऐसे अक्षर-पत्र में सम्मिलित होगी जिसमें निर्भर किए गए तथ्य स्थापित किए गए हों सिवाए उन प्रस्तावों के जो महा न्यायाधी या महा-सालिसिटर या अपर महा-सालिसिटर द्वारा किए गए हों;

(छ) प्रत्येक याचिका, याची और उनके अभिवक्ता, यदि कोई हो, द्वारा हस्ताक्षरित होगी और उसमें स्थान और तारीख भी वर्णित होंगे;

(ज) प्रारूप प्रभार पुष्कल कारणों में संलग्न किए जाएंगे;

(झ) सिविल अवमान की दशा में, ऐसे अभिकथित निर्णय, विध्वि, आदेश, रिट या परिवचन, जिसकी अवज्ञा की गई है, की प्रमाणित प्रति याचिका के साथ फाइल की जाएगी;

(ञ) याची यदि अपने कब्जे या शक्ति के अधीन किसी अन्य दस्तावेज/दस्तावेजों पर निर्भर करता है तो उन्हें याचिका के साथ फाइल करेगा;

(2) अधिनियम की धारा 14 में निविष्ट अवमान से भिन्न अधिकरण के "आपराधिक अवमान" की दशा में, याची कथित करेगा कि उसने महा-न्यायाधी या महासालिसिटर या अपर महा-सालिसिटर से सहमति प्राप्त कर ली है या नहीं और यदि हाँ तो वह उसे प्रस्तुत करेगा और यदि नहीं है तो उसके कारण बताएगा;

(3) याची, याचिका के उपबंधों सहित तीन पूरे सेट, सम्यक रूप से अनुक्रमणिकांकित और पृष्ठ संख्यांकित अभिवेज पक्षिक 1 के

रूप में फाइल करेगा। जहाँ प्रत्यर्थियों की संख्या एक से अधिक है, वहाँ उसी संख्या में अतिरिक्त अभिवेज पुस्तिका फाइल की जाएगी।

(4) याचिका या कार्यवाहियों में फाइल किए गए किसी दस्तावेज पर कोई फीस नदेय नहीं होगी।

6. संज्ञान करना—अवमान के लिए प्रत्येक कार्यवाही ऐसी न्यायपीठ द्वारा की जाएगी जिसमें दो से कम सदस्य नहीं होंगे।

परन्तु जहाँ अवमान, सदस्य/बो के समक्ष, के उनकी उपस्थिति या सुनवाई के समय किया गया अभिकथित है, वहाँ उस पर सदस्य/(यों) द्वारा अधिनियम की धारा 14 के अनुसार कार्यवाही की जाएगी।

7. कार्यवाही प्रारम्भ करना—(i) इन नियमों के अनुसार सिविल अवमान के लिए की गई प्रत्येक याचिका की संवीक्षा रजिस्ट्रार द्वारा की जाएगी, रजिस्ट्री में उसे रजिस्ट्रीकृत और संख्यांकित किया जाएगा और तब उसे न्यायपीठ के समक्ष प्रारंभिक सुनवाई के लिए रखा जाएगा।

(ii) अधिनियम के अधीन आपराधिक अवमान की कार्रवाई प्रारंभ करने के लिए इन नियमों के अनुसार आपराधिक अवमान के लिए की गई प्रत्येक याचिका और याचिका से भिन्न प्रत्येक सूचना, रजिस्ट्रार द्वारा संवीक्षा के पश्चात् प्रधान न्याय पीठ की दशा में, पहले प्रशासनिक पक्ष में आयुक्त के समक्ष और अन्य न्यायपीठों की दशा में संबंधित उपाध्यक्ष या ऐसे अन्य सदस्य जो उसके द्वारा इसे प्रयोजनार्थ पदामिहित किया गया हो के समक्ष रखी जाएगी और यदि वह उस अधिनियम के अधीन कार्रवाई करने के लिए समीचीन और उचित समझता है तो उक्त याचिका या सूचना रजिस्ट्री में रजिस्ट्रीकृत और संख्यांकित की जाएगी और तब उसे प्रारंभिक सुनवाई के लिए न्यायपीठ के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

(iii) जब स्वयंसेवा से कार्रवाई की जा रही हो, तब अभिकथित अवमान गठित करने वाले तथ्यों का विवरण और प्रारूप प्रभारों की प्रति तैयार की जाएगी और प्रारंभिक सुनवाई के लिए प्रस्तुत किए जाने से पहले रजिस्ट्रार द्वारा उस पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

3. प्रारंभिक सुनवाई और नोटिस—(i) यदि न्यायपीठ का यह समाधान हो जाता है कि प्रथम दृष्टया मामला बन गया है तो वह प्रत्यर्थी को नोटिस जारी करने का निदेश दे सकेगी, अन्यथा वह याचिका को खारिज कर देगी।

(ii) नोटिस प्रत्य सं. 1 में होगा और उसके साथ याचिका या सूचना की प्रति और उपाबंध, यदि कोई हों, संलग्न किए जाएंगे।

(iii) नोटिस की तामील, केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण (प्रश्रिया) नियम, 1987 में विनिर्दिष्ट रीति से या ऐसी अन्य रीति से जो न्यायपीठ द्वारा निदेशित की जाए, की जाएगी।

9. हाजिरी के लिए बाध्य करना—(1) अधिकरण, यदि उसके पास यह विश्वास करने का कारण है कि प्रत्यर्थी फगर है या नोटिस की तामील से बच रहा है या नोटिस के अनुसरण में व्यक्तिगत रूप से उपसंजात होने में असफल रहा है तो वह एक या अधिक पुलिस अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए उसकी गिरफ्तारी के लिए जमानतसीध या अमानतसीध वारंट जारी करने का निदेश दे सकेगा या ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति की कुर्की का आदेश कर सकेगा ऐसे वारंट और कुर्की—आदेश रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर के अधीन जारी किए जाएंगे।

ऐसा वारंट प्रत्य सं. 2 में होगा और जहाँ तक हो सकेगा इसका निष्पादन संहिता के अधीन वारंट के निष्पादन के लिए उपबंधित रीति से किया जाएगा।

(2) वारंट का निष्पादन ऐसे अधिकारी या अधिकारियों द्वारा किया जाएगा जिन्हें यह निदेशित है। इसका निष्पादन किसी ऐसे पुलिस अधिकारी द्वारा भी किया जा सकेगा जिसका नाम वारंट पर किसी ऐसे अधिकारी द्वारा पृष्ठांकित किया गया है जिसे वह वारंट निदेशित या पृष्ठांकित है।

(III) प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को, जिसे गिरफ्तार किया और निरुद्ध रखा गया है, यदि उसे गिरफ्तारी के चौबीस घंटे के भीतर जिसमें गिरफ्तारी के स्थान से अधिकरण तक की यात्रा के लिए आवश्यक समय सम्मिलित नहीं है, अधिकरण के समक्ष पेश नहीं किया जा सकता है, तो उसे उक्त अवधि के भीतर किसी निकटतम मजिस्ट्रेट के मंत्र पेश किया जाएगा, जो निरोध को उक्त समय तक प्राधिकृत कर सकेगा जब तक कि ऐसा व्यक्ति अधिकरण के समक्ष पेश नहीं किया जाता है।

(IV) प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को, जिसे गिरफ्तार किया और निरुद्ध रखा गया है, जब अधिकरण के समक्ष पेश किया जाता है तो उसे प्रतिभूति सहित या बिना प्रतिभूति के ऐसी धनराशि जो अधिकरण पर्याप्त समझे, के बंधपत्र के विरुद्ध जमानत पर इस शर्त के साथ निर्मुक्त किया जाएगा कि इस प्रकार निर्मुक्त व्यक्ति, बंधपत्र में उल्लिखित समय और स्थान पर अधिकरण में उपस्थित होगा और तब तक उपस्थित होता रहेगा जब तक कि अधिकरण द्वारा अन्यथा निर्देश न दिया जाए।

परन्तु यह कि अधिकरण, यदि वह उचित समझे, ऐसे व्यक्ति को उसकी हाजिरी के लिए, उससे जमानत लेने की प्रोक्षा उसे वैयक्तिक बंधपत्र पर निर्मुक्त कर सकेगा। मंहिता के उल्लंघन, जहाँ तक ही सके, इन नियमों के अधीन की गई सभी गिरफ्तारियों और निष्पादित बंधपत्रों को लागू होंगे।

10. प्रत्यर्थी की उपसंज्ञाति:—जब तक कि अधिकरण द्वारा अन्यथा आदेश न दिया जाए, इन नियमों के अधीन जब कभी कोई नोटिस जारी किया जाता है तो प्रत्यर्थी "आपराधिक अवमान की दशा में" व्यक्तिगत रूप से और "निमित्त अवमान की दशा में" व्यक्तिगत रूप से या अधिकरण के माध्यम से नोटिस में विनिर्दिष्ट स्थान और समय पर उपसंज्ञात होगा और वह ऐसी सभी पश्चात्कर्तरी तारीखों को, जिन पर याचिका सुनवाई के लिए लगाई जाती है, उपस्थित होता रहेगा।

11. प्रत्यर्थी द्वारा उत्तर:—प्रत्यर्थी सम्यक् रूप से शपथ पत्र द्वारा समर्पित अपना उत्तर सुनवाई की पहली तारीख या उससे पहले या उस विस्तारित समय के भीतर जो अधिकरण द्वारा अनुवृत्त किया जाए, फाइल कर सकेगा।

12. अधिकरण द्वारा प्रतिवाद किए जाने का अधिकार:—ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जिसके विरुद्ध, इस अधिनियम के अधीन कार्यवाही प्रारंभ की जा रही है, अपने चुनाव के अधिकरण द्वारा, प्रतिवाद किए जाने का अधिकार होगा।

13. मामले की सुनवाई और विचारण:—प्रत्यर्थी द्वारा फाइल किए गए उत्तर पर विचार करने और पक्षकारों को सुने जाने के पश्चात्,

(क) यदि प्रत्यर्थी, यह स्वीकार करने के पश्चात् कि उसने अवमान किया है, अक्षत क्षमा याचना करता है, तो अधिकरण ऐसा आदेश पारित करेगा जो वह उचित समझे;

(ख) यदि प्रत्यर्थी यह स्वीकार नहीं करता है कि उसने अवमान किया है, तो अधिकरण:—

(i) यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि प्रथम दृष्टया मामला बनता है, तो वह प्ररूप सं III (अधिकरण द्वारा किसी भी समय उपांतरण या परिवर्द्धन के अधीन रहते हुए) में आरोप तैयार करेगा; या

(ii) यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि प्रथम दृष्टया मामला नहीं बनता है या कार्यवाही करना समीचीन नहीं है तो वह कोई कार्यवाही नहीं करेगा और प्रत्यर्थी को उन्मोचित कर देगा।

(ग) प्रत्यर्थी को विरचित आरोप की एक प्रति दी जाएगी जिसे प्रत्यर्थी को पढ़कर सुनाया और समझाया जाएगा। इसके पश्चात् अधिकरण उसके अधिकरण को, यदि कोई हो, अभिलिखित करेगा—

(घ) यदि प्रत्यर्थी दोषी होने का अधिक्थन करता है तो अधिकरण, उसे दोषी अधिनिर्णीत करेगा और ऐसा बंडादेश देगा जो वह उचित समझे,

(ङ) यदि प्रत्यर्थी दोषी नहीं होने का अधिक्थन करता है तो मामले पर उमी दिन या अधिकरण द्वारा यथा निदेशित किसी पश्चात्कर्तरी तारीख को विचारण किया जाएगा।

14. कार्यवाही के संचालन में सहायता:—प्रत्यर्थी के विरुद्ध कार्यवाही के संचालन में, महाध्यायवादी/महामाजिस्ट्रेट/अपर महामाजिस्ट्रेट या अन्य कोई अधिकरण जिसे अधिकरण द्वारा परामर्शित किया जाता है, अधिकरण में उपसंज्ञात होगा और अधिकरण की सहायता करेगा।

15. विचारण के लिए प्रक्रिया:—(I) अधिनियम और इन नियमों में अन्यथा उपबन्धित के सिवाए, अवमान के मामलों के विचारण में भावनात्मक, सहिता के अध्याय के XXI के अधीन सक्षिप्त विचारण के लिए विहित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा;।

(II) अधिकरण, स्वविवेकानुसार, शपथ-पत्र के रूप में माशुब प्रस्तुत किए जाने का निदेश दे सकेगा।

(III) अधिकरण, स्वप्रेरणा से या इस प्रयोजन के लिए कि वह प्रस्ताव पर ऐसे व्यक्ति को, जिसका शपथ-पत्र, इस मामले में फाइल किया गया है, प्रतिपरीक्षा के लिए हाजिरी का आदेश कर सकेगा।

(IV) अधिकरण, स्वविवेक से किसी भी व्यक्ति की अधिकरण के माश्री के रूप में, परीक्षा के लिए निदेश दे सकेगा।

(V) अधिकरण, माश्री के रूप में किसी व्यक्ति को परीक्षा के लिए उसकी हाजिरी और किसी वस्तुओं के प्रकटकरण या प्रस्तुतिकरण की सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए, जैसा वह उचित समझे, आदेश कर सकेगा।

16. माश्री के रूप:—(i) बड़ी अधिकरण द्वारा, किसी व्यक्ति को अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही में माश्री के रूप में उपसंज्ञात होने के लिए समन किया जाता है, बड़ी अधिकरण द्वारा बंधावबन्धित ऐसे माश्री के व्यय उस पक्ष द्वारा बहुत किये जाने विरुद्ध उक्त माश्री के रूप में तलब किया है।

(II) जहाँ अधिकरण, पक्षकारों द्वारा तलब किये गए पक्षियों के भिलन किसी माश्री के समन करना है, बड़ी अधिकरण द्वारा यथा अवधारित उसका व्यय रजिस्ट्रार द्वारा आकस्मिक धन निधि से संबंधित किया जाएगा।

17. बंडादेश का निष्पादन:—(i) यदि प्रत्यर्थी दोषी पाया जाता है और उसे अधिकरण के उठने तक के कारावास है भिलन कारावास का बंडादेश दिया जाता है तो उसकी सुपूर्दगी और निरोध का बंडादेश प्ररूप सं. IV में रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर के अधीन तैयार किया जाएगा। ऐसा प्रत्येक बार उक्त तब तक प्रवृत्त रहेगा जब तक इसका निराकरण नहीं कर दिया जाता या अधिकरण के आदेश द्वारा इसे रद्द नहीं कर दिया जाता।

आदेश में विनिर्दिष्ट जेल अधीक्षक, बारट के अनुसरण में, उक्त विनिर्दिष्ट अवधि तक अधिकरण द्वारा दिए जाने वाले अनुरोध के अधीन रहते हुए, अवमान कर्ता की अभिरक्षा में निरुद्ध रहेगा।

(ii) जब अधिकरण, जुर्माने का बंडादेश देता है और जुर्माने की राशि तुरन्त या अधिकरण द्वारा अनुवृत्त समय के भीतर संकलन नहीं की जाती है तो रजिस्ट्रार, संहिता की धारा 421 में उपबन्धित रीतियों में से किसी भी रीति से कार्यवाही करेगा।

(iii) उपनियम (ii) के अधीन बारट, न्यायस्थिति, प्ररूप सं. V और प्ररूप सं. VI में जारी किया जाएगा।

(4) जेल अधीक्षक या पुलिस अधिकारी या जिला कलक्टर जिन्हें उपनियम (iii) के अधीन बारट सम्बोधित किया गया हो, की गई कार्रवाई की ग्पिंट मामले के अधिनियम में फाइल करेगा।

18. आदेशिका का निष्पादन :—अधिकरण द्वारा जारी की गई आदेशिकाएं, ग्रन्थया विशिष्टनया उपबंधित के सिवाए, यथास्थिति, पृथिव्य प्रतीक/पुलित आबुद्धत द्वारा निष्पादित की जाएंगी।

19. बंधपत्र के समबहरण संबंधी प्रक्रिया :—यदि प्रत्यर्थी की अनुवस्थिति के कारण उसकी उपसंज्ञाति के लिए लिया गया बंधपत्र सम्पहत हो जाता है तो अधिकरण, यथास्थिति, प्रत्यर्थी या प्रतिभू की प्रबसर बेने के पश्चात् प्रतिभूति बंधपत्र में उल्लिखित सपूर्ण राशि या उसके किसी भाग को शास्ति के रूप में उद्ग्रहित करेगा और उसे इस तरह बसूल किए जाने का निदेश देता जैसे कि यह संहिता के अधीन प्रत्यर्थी प्रनिमूति पर प्रबरोपित जुर्माना हो।

20. कार्यवाही के किसी प्रक्रम पर क्षमा याचना :—(i) यदि कार्यवाही के लम्बित रहने के दौरान किसी समय प्रबमान कर्ता क्षमा याचना करता है तो उसकी क्षमा याचना को स्वायधीठ के समय आदेश के लिए शीघ्र रखा जाएगा।

(ii) यदि अधिकरण उसकी क्षमा याचना को स्वीकार कर लेता है तो प्रागे की कार्यवाही समाप्त कर दी जाएगी।

21. खर्च :—(i) अधिकरण, मामले की परिस्थितियों के अनुसार, शैसा उचित समझे, खर्चा अधिनिर्णीत करेगा।

(ii) इस प्रकार अधिनिर्णीत खर्च को उसी रीति से बसूल किया जाएगा जैसा कि संहिता के अधीन अधिरोपित जुर्माने को किया जाता है।

22. अधिकरण के ग्रन्थ नियमों का लागू होना :—ऐसे मामलों के संबंध में जो इन नियमों में विशिष्टनया उपबंधित नहीं हैं, समय समय पर यथा संशोधित अधिकरण के सुसंगत नियमों में बिहित प्रक्रिया, इन नियमों के अधीन कार्यवाहियों के यथा-आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होगी।

23. संज्ञित कार्यवाहियों की लागू होना :—ये नियम, यावत्माध्य, संज्ञित कार्यवाहियों का लागू होंगे।

[क्रम सं. 1/446/86-जे ए]

डी.सी. बर्मा, रजिस्ट्रार

प्रकरण स. I

[नियम 8 (ii) देखें]

प्रत्यर्थी को नोटिस

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(स्वायधीठ का नाम)

स्थान

प्रबमान याचिका सिविल/प्रापराधिक सं. _____

याची- _____

बनाम

प्रत्यर्थी- _____

(यहां उस व्यक्ति का नाम और पता लिखें जिसे नोटिस भेजा जा रहा है।)

श्री- _____ द्वारा सूचना दी गई है / याचिका काबल की गई है। प्रस्ताव किया गया है कि प्राप (यहां सूचना/याचिका) प्रस्ताव में लगाए गए अधिनियम का सारांश उल्लिखित करें- _____

और प्रापके विरुद्ध न्यायालय प्रबमान अधिनियम, 1971 के अधीन कार्यवाही करने के लिए याचिका रजिस्ट्रीकृत की गई है :

प्राप से तारीख- _____ को

बजे और ऐसी पश्चात्पूर्ती तारीखों पर जिनके लिए कार्यवाही स्थगित की जाती है, जब तक कि अधिकरण द्वारा ग्रन्थया आदेश न किया जाए, व्यक्तिगत रूप से या सम्यक रूप से प्राधिकृत अधिवक्ता* के माध्यम से उपसंज्ञात होने और यह कारण बताने की अपेक्षा की जाती है कि प्रापके विरुद्ध न्यायालय प्रबमान अधिनियम 1971 के अधीन ऐसी कार्यवाही जो उचित समझी जाए क्यों न की जाए। प्राप, तारीख- _____ मेरे हस्ताक्षर और अधिकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

*जो लागू न हो, उसे काट दें।

प्रकरण सं II

[नियम 9(i) देखें]

गिरफ्तारी का वारंट

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(स्वायधीठ का नाम)

स्थान

प्रबमान याचिका सिविल/प्रापराधिक सं. _____

याची- _____

बनाम

प्रत्यर्थी- _____

सेवा में,

(वारंट के निष्पादन के लिए प्राधिकृत किए गए अधिकारियों का नाम, पदाभिधान और पता)

श्री/श्रीमती _____ नि. _____

पर अधिकरण के प्रबमान का आरोप लगाया गया है। प्रापको यह निदेश दिया जाता है कि उक्त- _____ को गिरफ्तार करके इस अधिकरण के सपक्ष प्रस्तुत करें।

इसमें असफल न हों।

(यदि अधिकरण ने जमानतीय वारंट जारी किया है तो वारंट पर निम्न-लिखित पृष्ठांकित किया जाएगा)

यदि उक्त श्री- _____ एक प्रतिभू के साथ- _____ द. की राशि की (दो प्रतिभूओं के साथ- _____ द. प्रत्येक की राशि की) तारीख- _____

को और उसके पश्चात् तब तक जब तक इस अधिकरण द्वारा ग्रन्थया निदेश न किया जाए, अधिकरण में उपस्थित होने के लिए जमानत देना है तो उसे निर्मुक्त किया जा सकता है।

प्राप, तारीख- _____ को मेरे हस्ताक्षर और अधिकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

प्रारूप सं III

[नियम 13(ख) (i) देखें]

आरोप

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(स्वायत्ती का नाम)

स्थान

अवमान याचिका सिविल/आपराधिक स

याची

बनाम

प्रत्यर्थी

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

आप श्री (अधिकृत अवमान कर्ता का नाम) पर निम्नलिखित आरोप लगाया है:—

कि आपने तारीख

को

बजे

(यहां अधिकृत अवमान गठित करने वाले तथ्यों का सारांश दें) किया और इस प्रकार हमारे सजान में द्वारा (यहां न्यायालय अवमान अधिनियम, 1971 की सुसंगत धारा लिखें) के अधीन दंडनीय रूप न्यायालय का अवमान किया है।

पूर्वोक्त आरोप के लिए आपको अधिकरण द्वारा विचारण का निर्देश दिया जाता है।

माननीय सदस्य/यों के हस्ताक्षर

अधिकृत अवमान कर्ता को आरोप पत्रकर सुनाया गया और समझा दिया गया है और उसका अधिकृत निम्नलिखित रूप में अभिलेखित किया गया है:—

(1) क्या आप आरोप के बोधी होने का अधिकृत करते हैं?

उत्तर:

(2) क्या आप को और भी कुछ कहना है?

उत्तर

अधिकृत अवमानकर्ता के
हस्ताक्षर

स्वायत्ती पर पीठासीन

माननीय सदस्य/यों के हस्ताक्षर

कारागार को मुमुर्दगी का वारंट

प्रारूप सं IV

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(स्वायत्ती का नाम)

स्थान

अवमान याचिका सिविल/आपराधिक स

याची

बनाम

प्रत्यर्थी

सेवा में

अधीक्षक

(जेल का नाम)

स्थान

यह कि दो प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष अधिकरण (स्वायत्ती का नाम) के द्वारा तारीख

(अवमान कर्ता का नाम/वर्णन) को अधिकरण को जान बूझकर अवमान करने का दोषों न्यायनिर्णित किया है और उसे अवधि के लिए (यहां अवधि विनिर्दिष्ट करें) साधारण कारावास भोगने और/या रूपों के जुमाने का न्याय करने और जुमाने के न्याय में व्यक्तिगत पर अवधि के लिए (अवधि विनिर्दिष्ट करें) साधारण कारावास भोगने का दंडादेश दिया है।

अतः आप अवधि के अवधि के अधीक्षक को प्राधिकृत किया जाता है और आप से अपेक्षा की जाती है कि आप उक्त (अवमान कर्ता का नाम) को अपनी अभिरक्षा में इस वारंट के साथ प्राप्त करें और उक्त कारागार में, उक्त अवधि या ऐसे अवधि के लिये जिसे यह अधिकरण आदेश द्वारा नियत करें और आपको संयुक्त करें सुरक्षित रखें।

आपको यह निर्देश दिया जाता है कि इस वारंट का इसके निष्पादन की गति को पृच्छाकृत द्वारा प्रमाणित करते हुए लौटा दें।

आप को यह भी निर्देश दिया जाता है कि आप जब तक उक्त आ-आपका अभिरक्षा में है उक्त श्री को इस अधिकरण द्वारा न्यायनिर्दिष्ट सभी समयों पर अधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करें।

आज, तारीख को मेरे हस्ताक्षर और अधिकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

चल सम्पत्ति की कुर्की का वारंट

प्रारूप सं V

[नियम 17(i) और (iii) देखें]

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

स्वायत्ती का नाम

स्थान

अवमान याचिका सिविल/आपराधिक स

याची

बनाम

प्रत्यर्थी

सेवा में

(वारंट का निष्पादन करने के लिए प्राधिकृत किए गए पुलिस अधिकार या अन्य अधिकारी का नाम और पदाभिधान)

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण ने आज तारीख

का श्री (अवमान कर्ता का नाम और वर्णन) को अधिकरण का जान बूझकर अवमान करने का दोषों अधिनियमित किया है और उसे रूपों जुमाने के न्याय का दंडादेश दिया है और क्योंकि उक्त श्री (नाम) से यद्यपि उक्त जुमाने के न्याय को अपेक्षा की गई थी परन्तु उसने उक्त जुमाने या उसके किसी भाग का न्याय नहीं किया है।

आपको प्राधिकृत किया जाता है और यह अपेक्षा की जाती है कि आप उक्त श्री (नाम) को किसी चल सम्पत्ति की, जा-जिसे के भीतर मिले, कुर्की करें और याद ऐसे कुर्की के पश्चात् (अनुशेष दिती और घटो की नक़्का लिखें) का नाम उक्त राजि का न्याय नहीं किया जाता है तो उक्त कुर्की

बल सम्पत्ति या उसके उतने भाग को जिससे उक्त जुमाने का समाधान हो जाए, विक्रय करे और इस वारंट को इसके निष्पादन के तुरन्त पश्चात् ऐसे पृष्ठांकन के साथ कि अपने वारंट के अनुसार इसे निष्पादित कर दिया है, वापस करें। आज तारीख-----को मेरे हस्ताक्षर और अधीकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधीकरण

जिला कलेक्टर/उप आयुक्त द्वारा कुर्की का वारंट

प्रारूप नं. VI

(नियम 17(ii) और (iii) देखें)

केन्द्रीय प्रशासनिक अधीकरण

(ग्राह्यपीठ का नाम)

स्थान

अवमान याचिका सिविल/आपराधिक नं.-----

याचकी-----

बनाम

प्रत्यक्षी-----

सेवा में,

जिला कलेक्टर/उप आयुक्त

जिला-----

केन्द्रीय प्रशासनिक अधीकरण ने आज तारीख-----

को श्री----- (अवमान कर्ता का नाम और वर्णन) को अधीकरण का जान बूझकर अवमान करने का दोषी प्रतिनिर्णीत किया है और उसे----- रूप से जुमाने के संदाय का वंदादेश दिया है और क्योंकि उक्त श्री----- (नाम) से यद्यपि उक्त जुमाने के संदाय की अपेक्षा की गई थी परन्तु उसने उक्त जुमाने या उसके किसी भाग का संदाय नहीं किया है।

आपको प्राधिकृत किया जाता है और आप से अपेक्षा की जाती है कि आप दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 42 द्वारा उपबंधित रीति में पूर्वोक्त प्रत्यक्षी को बल सम्पत्ति या अचल सम्पत्ति या दोनों से सिविल प्रक्रिया के प्रारम्भ निष्पादन द्वारा राजि की बमूली करें।

सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अध्यात्मन यह आदेश डिक्री और आप डिक्रीदार समझे जाएंगे और यह आदेश ऐसी डिक्री के रूप में निष्पादन योग्य होगा।

आज तारीख-----को मेरे हस्ताक्षर और अधीकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधीकरण

CENTRAL ADMINISTRATIVE TRIBUNAL

(Contempt of Courts) Rules 1992

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th September, 1992

G.S.R. 757(E).—In exercise of powers conferred by Section 23 of the Contempt of Courts Act, 1971 (70 of 1971) read with Section 17 of the Administrative Tribunals Act, 1985 (Act 13 of 1985) and all

other powers enabling it in this behalf and in supersession of all rules on the subject, the Central Administrative Tribunal hereby makes the following rules to regulate the proceedings under the said Act:

1. Short title and Commencement.—(i) These rules may be called 'Contempt of Courts (CAT) Rules, 1992'.

(ii) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules unless there is anything repugnant to the subject or context:—

- (a) 'Act' means the Contempt of Courts Act, 1971 (Act 70 of 1971);
- (b) 'Code' means the Code of Criminal Procedure;
- (c) 'Form' means the form set out in the appendix to these rules;
- (d) 'Member' means a Member, whether 'Judicial' or 'Administrative' and includes Vice Chairman and Chairman.
- (e) 'Registrar' means Registrar of the Central Administrative Tribunal or its Benches where the contempt proceedings are taken and shall include Joint Registrar and Deputy Registrar, and the Section Officer authorised to discharge the functions of the Registrar;
- (f) 'Section' means a section of the Act;
- (g) 'Tribunal' means the Central Administrative Tribunal constituted under the Administrative Tribunals Act, 1985 or the Bench thereof, where the proceedings are taken cognizance of;
- (h) Words and expression not defined in these rules shall have the same meaning as defined in the Act.

3. Form of Motion.—Every motion for initiating action for contempt of the Tribunal shall be in the form of a petition described as 'Contempt Petition (Civil)' in respect of Civil Contempt and 'Contempt Petition (Criminal)' in respect of Criminal Contempt.

4. Parties to the Proceedings.—The party who presents the petition shall be described as the 'Petitioner' and the alleged contemner shall be described as the 'Respondent'.

5. Contents of the Petition.—The petition shall set out the following particulars:

- (i) (a) Name (including as far as possible the name of the father/mother/husband, age) occupation and address of:
 - (i) the petitioner; and
 - (ii) the respondent.

If the alleged contemner is an officer, he shall be described by name and designation.

- (b) provision of the Act invoked and the nature of the contempt, 'Civil' or 'Criminal';
- (c) the grounds and material facts constituting the alleged contempt including the date of alleged contempt, divided into paragraphs, numbered consecutively, along with supporting documents or certified/photostat (attested) copies of the originals thereof;
- (d) the nature of the order sought from the Tribunal;
- (e) if a petition has previously been made by him on the same facts, the details, particulars and the result thereof;
- (f) the petition shall be supported by an affidavit verifying the facts relied upon except when the motion is by the Attorney General or the Solicitor General or the Additional Solicitor General;
- (g) every petition shall be signed by the petitioner and his Advocate, if any, and shall show the place and date;
- (h) draft charges shall be enclosed in a separate sheet;
- (i) in the case of 'Civil Contempt' certified copy of the judgment, decree, order, writ or undertaking alleged to have been disobeyed shall be filed along with the petition;
- (j) where the petitioner relies upon any other document/s in his possession, or power, he shall file them along with the petition;
- (ii) in the case of 'Criminal Contempt' of the Tribunal other than a contempt referred to in Section 14 of the Act, the petitioner shall state whether he has obtained the consent of the Attorney General or the Solicitor General or the Additional Solicitor General and if so, produce the same, if not the reasons thereof;
- (iii) the petitioner shall file three complete sets of the petition including the annexures in paper book form, duly indexed and paginated. Where the number of respondents is more than one, equal number of extra paper books shall be filed;
- (iv) No fee shall be payable on a petition or any document filed in the proceedings.

6. Taking cognizance.—Every proceeding for contempt shall be dealt with by a Bench of not less than two Members.

Provided where the contempt is alleged to have been committed in view of, presence or hearing of the Member(s), the same shall be dealt with by the Member(s) in accordance with Section 14 of the Act.

7. Initiation of proceedings.—(i) Every petition for 'Civil Contempt' made in accordance with these rules shall be scrutinised by the

Registrar, registered and numbered in the Registry and then placed before the Bench for preliminary hearing.

- (ii) Every petition for 'Criminal Contempt' made in accordance with these rules and every information other than a petition, for initiating action for criminal contempt under the Act on being scrutinised by the Registrar shall first be placed on the administrative side before the Chairman in the case of the Principal Bench and the concerned Vice Chairman in the case of other Benches or such other Member as may be designated by him for this purpose and he considers it expedient and proper to take action under the Act, the said petition or information shall be registered and numbered in the Registry and placed before the Bench for preliminary hearing.
 - (iii) When suo motu action is taken, the statement of facts constituting the alleged contempt and copy of the draft charges shall be prepared and signed by the Registrar before placing them for preliminary hearing.
8. Preliminary hearing and Notice :—(i) The Bench if satisfied that a prima facie case has been made out, may direct issue of notice to the respondent; otherwise, it shall dismiss the petition or drop the proceedings.
- (ii) The notice shall be in Form No. 1 and shall be accompanied by a copy of the petition or information, and annexures if any, thereto.
 - (iii) Service of notice shall be effected in the manner specified in the Central Administrative Tribunal (Procedure) Rules, 1987 or in such other manner as may be directed by the Bench.

9. Compelling attendance :

- (i) The Tribunal may, if it has reason to believe, that the respondent is absconding or is otherwise evading service of notice, or has failed to appear in person in pursuance of the notice, direct a warrant, bailable or non-bailable, for his arrest, addressed to one or more Police Officers or may order attachment of property belonging to such person. The warrant and the writ of attachment shall be issued under the signature of the Registrar. The warrant shall be in Form No. II and shall be executed as far as may be, in the manner provided for execution of warrants under the Code.
- (ii) The warrant shall be executed by the Officer or Officers to whom it is directed and may also be executed by any other Police Officer whose name is endorsed upon the warrant by the Officer to whom it is directed or endorsed.
- (iii) Every person who is arrested and detained shall, if he cannot be produced before the Tribunal within twenty-four hours of arrest

excluding the time necessary for the journey from the place of arrest to the Tribunal, be produced before the nearest Magistrate within the said period, who may authorise detention till such person is produced before the Tribunal.

- (iv) Every person who is arrested and detained when produced before the Tribunal, may be released on bail on a bond for such a sum of money as the Tribunal thinks sufficient with or without sureties, with the condition that the person so released shall attend the Tribunal at the time and place mentioned in the bond and shall continue to so attend until otherwise directed by the Tribunal :

Provided that the Tribunal may, if it thinks fit, instead of taking bail from such person, release him on personal bond for his attendance. The Provisions of the Code shall, so far as may be, apply to all arrests made and bonds executed under the Rules.

10. Appearance of the Respondent : Unless ordered otherwise by the Tribunal, whenever a notice is issued under these rules, the Respondent shall appear in person in the case of a 'criminal contempt' and in person or through an Advocate in the case of 'civil contempt', at the time and place specified in the notice and continue to attend on subsequent dates to which the petition is posted.

11. Reply by the Respondent : The Respondent may file his reply duly supported by an affidavit on or before the first date of hearing or within such extended time as may be granted by the Tribunal.

12. Right to be defended by an Advocate : Every person against whom proceedings are initiated under the Act, may as of right be defended by an Advocate of his choice.

13. Hearing of the case and trial : Upon consideration of the reply filed by the Respondent and after hearing the parties:

- (a) if the respondent has tendered an unconditional apology after admitting that he has committed the contempt, the Tribunal may proceed to pass such orders as it deems fit;
- (b) if the respondent does not admit that he has committed contempt, the Tribunal may—
 - (i) if it is satisfied that there is a *prima facie* case proceed to frame the charge in Form No. III (subject to modification or addition by the Tribunal at any time); or
 - (ii) drop the proceedings and discharge the respondent, if it is satisfied that there is no *prima facie* case, or that it is not expedient to proceed.
- (c) the respondent shall be furnished with a copy of the charge framed, which shall be read over and explained to the respondent. The Tribunal shall then record his plea, if any;

- (d) if the respondent pleads guilty, the Tribunal may adjudge him guilty and proceed to pass such sentence as it deems fit;
- (e) if the respondent pleads not guilty, the case may be taken up for trial on the same day or posted to any subsequent date as may be directed by the Tribunal.

14. Assistance in the conduct of proceedings.—The Attorney General|Solicitor General|Addl. Solicitor General, or any other Advocate as may be designated by the Tribunal shall appear and assist the Tribunal in the conduct of the proceedings against the respondent.

15. Procedure for trial.—(i) Except as otherwise provided in the Act and these rules, the procedure prescribed for summary trials under Chapter XXI of the Code shall as far as practicable be followed in the trial of cases for contempt.

(ii) The Tribunal may, at its discretion, direct that evidence be produced in the form of affidavits.

(iii) The Tribunal may, either suo motu or on motion made for that purpose, order the attendance for cross-examination of a person whose affidavit has been filed in the matter.

(iv) The Tribunal may, at its discretion, direct any person to be examined as Tribunal witness.

(v) The Tribunal may make such order as it deems fit for the purpose of securing the attendance of any person to be examined as a witness and for discovery or production of any document.

16. Expenses of witnesses.—(i) Where any person is summoned by the Tribunal to appear as a witness in any proceedings under the Act, the expenses of such witness as may be determined by the Tribunal shall be borne by the party who has cited him as a witness.

(ii) Where the Tribunal summons any witness other than the witnesses cited by the parties, his expenses as determined by the Tribunal shall be paid by the Registrar from the funds for contingencies.

17. Execution of sentence.—(i) If the respondent is found guilty and is sentenced to imprisonment other than imprisonment till rising of the Tribunal, a warrant of commitment and detention shall be made out in Form No. IV under the signature of the Registrar. Every such warrant shall remain in force until it is executed or cancelled by order of the Tribunal. The Superintendent of Jail specified in the order shall, in pursuance of the warrant, detain the contemner in custody for the period specified therein subject to such further direction as the Tribunal may give.

(i) When the Tribunal awards a sentence of fine and the fine amount is not paid at once or within such time as may be granted by the Tribunal, the Registrar shall take action in any one of the ways provided in Section 421 of the Code.

(iii) Warrants to be issued under sub-rule (ii) shall be in Form No. V and VI, as the case may be.

(iv) The report of the action taken by the Superintendent of the Jail or the Police Officer or District Collector to whom the warrant under sub-rule (iii) might have been addressed shall be filed in the records of the case.

18. Execution of processes.—Processes issued by the Tribunal shall, except as otherwise specifically provided, be executed by the Superintendent of Police/Commissioner of Police, as the case may be.

19. Procedure on forfeiture of the Bond.—If any bond given for appearance of the Respondent is forfeited due to his absence, the Tribunal may, after giving opportunity to the Respondent or the surety, as the case may be, levy the whole or any part of the amount mentioned in the surety bond, as penalty and direct the same to be recovered as if it were a fine imposed on the Respondent/surety under the Code.

20. Apology at any stage of the proceedings.—

(i) If at any time during the pendency of the proceedings, the contemner tenders an apology, the same shall be placed expeditiously for orders of the bench.

(ii) If the Tribunal accepts the apology, further proceedings shall be dropped.

21. Costs.—(i) The Tribunal may award costs as it deems fit in the circumstances of the case.

(ii) The costs so awarded shall be recovered in the same manner as a fine imposed under the Code.

22. Application of other Rules of the Tribunal.—In matters not specifically provided for in these rules, the procedure prescribed in the relevant rules of the Tribunal as amended from time to time shall mutatis mutandis apply to proceedings under these rules.

23. Application to pending proceedings.—These rules shall as far as practicable to pending proceedings.

[Sl. No. 1/46/86-JA]

D. C. VERMA, Registrar

FROM NO. 1.

[See Rule 13 (b) (i)]

Notice to Respondent

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place

*Contempt Petition Civil/Criminal No. _____

Petitioner _____

Vs.

Respondent _____

(here mention the name and address of the person to whom notice is being sent).

2270 GI/92—2

Whereas information is laid/a petition is filed/ motion is made by _____ that you (here mention the gist of the accusation made in the information/petition/motion) - _____

And whereas a petition has been registered for action being taken against you under the Contempt of Courts Act, 1971;

You are hereby required to appear in person or through a duly authorised advocate* on day of at and on subsequent dates to which the proceeding are adjourned, unless otherwise ordered by the Tribunal, and show cause why such action as is deemed fit under the Contempt of Courts Act, 1971 should not be taken against you.

Given under my hand and the seal of this Tribunal, this day of 19....

Seal

Registrar

Central Administrative Tribunal.

*Strike off whichever is not applicable.

RFOM NO. II

[See Rule 9(i)]

Warrant of Arrest.

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place.

Contempt Petition Civil/Criminal No. _____

Petitioner :

Vs.

Respondent :

To

.....
.....

(Name, designation and address of the Officer/s authorised to execute the warrant).

Whereas Shri/Smt. of is charged with committing contempt of the Tribunal, you are hereby directed to arrest the said and to produce him/her before this Tribunal.

Herein fail not.

(If the Tribunal has issued a bailable warrant, the following endorsement shall be made on the warrant).

If the said shall give bail in the sum of Rs. with one surety in the sum of Rs. (or two sureties each in the sum of Rs.) to attend before this Tribunal on the day of 19... and to continue so to attend until otherwise directed by This Tribunal, he may be released.

Given under my hand and the seal of the Tribunal this day of 19
Seal.

Registrar

Central Administrative Tribunal

FROM NO. III

[See Rule 13 (b) (i)]

CHARGE

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place.

Contempt petition Civil/Criminal No.

Petitioner :

Vs.

Respondents :

Central Administrative Tribunal Bench hereby charges you (name of the alleged contemner) as under :—

That you, on or about day of at (here give the gist of the material allegedly constituting contempt) and thereby committed the contempt of this Tribunal punishable under Section (here give the relevant section of the Contempt of Courts Act, 1971), within our cognizance.

You are hereby directed to be tried by this Tribunal for the aforesaid charge.

Signature of the Hon'ble member/s

The charge was read over and explained to the alleged contemner and his plea was recorded as under :

(1) Do you plead guilty to the charged?

Answer :

(2) Do you have anything else to say?

Answer :

Signature of the alleged contemner

Signatures of the Hon'ble
Member/s presiding over
the Bench.

WARRANT OF COMMITMENT TO PRISON

FORM NO. IV

[See Rule 17(i)]

(Name of the Bench) Place

Contempt petition civil/Criminal No.

Petitioner :

Vs.

Respondent/s :

To

The Superintendent
(Name of the Jail)
place.

Whereas the Central Administrative Tribunal ... Bench has on this day of adjudged ... (name/description of the contemner) guilty of wilful contempt of the Tribunal and sentenced to undergo simple imprisonment for (here specify the term) and/or to pay a fine of Rs. and in default of payment of fine to undergo simple imprisonment for (specify the period).

This is to authorise and require you, the Superintendent of the Jail, to receive the said (name of the contemner) into your custody, together with this warrant and keep him safely in the said jail for the said period or for such period as may hereinafter be fixed by the order of this Tribunal and intimated to you. You are directed to return this warrant with an endorsement certifying the manner of its execution.

You are further directed that while the said is in your custody, produce the said before this Tribunal at all times when the Tribunal so directs.

Given under my hand and seal of the Tribunal this day of

Seal.

Registrar

Central Administrative Tribunal

WARRANT FOR ATTACHMENT OF MOVABLES

FORM NO. V

[See Rule 17 (ii) & (iii)]

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE

TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place

Contempt Petition Civil/Criminal No.

Petitioner

Vs.

Respondent

To

(Name and designation of the Police Officer or other officer authorised to execute the warrant).

Whereas the Central Administrative Tribunal on (this day) has adjudged (name and description of the contemner) guilty of wilful contempt of Tribunal and sentenced to pay a fine of Rs. and whereas the said (name) although required to pay the said fine has not paid the same or any part thereof.

This is to authorise and require you to attach any moveable property belonging to the said....., (name) which may be found within the district of..... and if within..... (state the number of days or hours allowed) next after such attachment, the said sum shall not be said to sell the moveable property attached or so much thereof, as shall be sufficient to satisfy the said fine, returning this warrant, with an endorsement certifying that you have done under it, immediately upon its execution.

Given under my hand and the seal of the Tribunal this..... day of..... 19.....
Seal.

Registrar

Central Administrative Tribunal.

**WARRANT OF ATTACHMENT BY DISTRICT
COLLECTOR|DY. COMMISSIONER**

FORM NO. VI

[See Rule 17 (ii) & (iii)]

**IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL**

(Name of the Bench) Place

Contempt Petition Civil|Criminal No.

Petitioner

Vs.

Respondent

To

The District Collector|Dy. Commissioner
..... District.

Whereas the Central Administrative Tribunal on (this day) has adjudged (name and description of the contemner) guilty of wilful contempt of Tribunal and sentenced to pay a fine of Rs. and whereas the said..... (name) although required to pay the said fine has not paid the said fine|the sum of being the part thereof.

This is to authorise and require you to realise the amount by execution according to civil process against the moveable or immoveable property or both of the respondent aforesaid in the manner provided by Section 421 of the Code of Criminal Procedure, 1973.

This order shall be deemed to be a decree and you the decree holder within the meaning of the Code of Civil Procedure, 908 and the order shall be executable as such decree.

Given under my hand and the seal of this Court, this..... day of..... 19.....

Seal.

Registrar

Central Administrative Tribunal

